भूमि आंवला (हजार दाना)

पादप रूपरेखा

परिवार	:	*यूफोरबिएसी*
अंग्रेजी नाम	:	कन्ट्री गोजबेरी
भारतीय नाम	:	भूअम्लकी, बहुपत्री (संस्कृत) जंगलीअमली, हजारदाना, जैरामाला (हिन्दी) कीला नेल्ली (तमिल) नीला उसीरिका (तेलगु) नीला– नेल्ली, केरानेल्ली (कन्नड़) भोन्या अमली, अनमाली (गुजराती) भूइवाली (मराठी) भूईमाला (बंगाली) केजानेली (मलयालम)
प्रजातियां	:	*फाइलेंथस एमेरस* स्कम एवं थोन (*पी. निरूरी* आक्ट., नॉन एल.) पी. फ्रेटरनस वैबस्टर
वितरण	:	अमेरिका, चीन, फिलीपींस, क्यूबा, नाईजीरिया, ग्वाम,

पश्चिम अफ्रीका

यह एक विशिष्ट लक्षण वाली हर्ब है जिसे भारत में वर्षा के मौसम में खरपतवार के रूप में उगने वाला पाया गया है। इस पौधे को देश के कई हिस्सों में जैसे पंजाब, उत्तर प्रदेश, तमिल नाडु, महाराष्ट्र तथा सिक्किम में खरपतवार के रूप में आसानी से उगाया जाता है।

औषधीय उपयोग

- मुख्य एल्कालाइड इसमें लिनिन्स के रूप में है जैसे **फाइलेनथिन** तथा **हाईपोफाइलेनथिन**
- विश्व के कई हिस्सों में इसे जिगर की खराबी, विशेष रूप **से हिपेटाइटिस बी तथा पीलिया** के कारण, आंत संक्रमण, मधुमेह आदि के उपचार में जनसाधारण की दवाई के रूप में उपयोग किया जाता है।
- दवाई की पारंपरिक प्रणाली में अनेक संयोजनों में यह एक महत्वपूर्ण घटक है तथा इसका उपयोग ब्रानकाइटिस, कुष्ठ रोग, दमा तथा हिचकी रोग में स्वास्थ्य लाभ में किया जाता है।
- यूनानी प्रणाली में इसका फल घावों, खुजली तथा गोलकृमि संबंधी रोगों में उपयोगी है।
- जड़ का मिश्रण एक अच्छा शक्तिवर्धक टॉनिक है।

उत्पादन प्रौद्योगिकी

मृदा

- इसे विभिन्न प्रकार की मृदा में अच्छी तरह उगने वाला पाया गया। इसमें देश के विभिन्न हिस्सों की चिकनी से दोमट मृदा तक शामिल है।
- इसके लिए मृदा पीएच 5.5 से 8.0 के बीच होना चाहिए।
- इसे अच्छी जल निकासी वाली चूनेदार मृदा में भी उगाया जा सकता है।

जलवायु

- यह एक परि–उष्णकटिबंध (सरकमट्रोपिकल) खरपतवार है और यह उष्णकटिबंध तथा उच्च वर्षा वाली स्थितियों में निर्वाह कर सकता है।
- यह अस्थायी जलमग्नता को भी सहन कर सकता है।

किस्में

उच्च हर्बेज पैदावार तथा सक्रिय तत्वों को प्राप्त करने के लिए सी आई एम ए पी, लखनऊ से '**नव्यकृत**' नामक एक सलैक्टशन को उत्कृष्ट पाया गया।

किस्मों के विवरण तथा रोपण सामग्री की उपलब्धता की जानकारी के लिए कृपया निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें :

निदेशक
केन्द्रीय औषधीय एवं संगधीय पादप अनुसंधान संस्थान
पी.ओ.: सी आई एम ए पी, लखनऊ– 226015 (उ.प्र.)
दूरभाष : 0522 – 2359624
फैक्स : 0522 – 2342666

लागत

क्र.सं.	सामग्री	प्रति एकड़	प्रति हैक्टेयर
1.	बीज (कि.ग्रा.)	0.4	1.0
2.	फार्म यार्ड खाद (टन)	4	10
3.	उर्वरक (कि.ग्रा.)		
	N	60	150
	P_2O_5	24	60
	K_2O	24	60

टिप्पणी : प्रतिरोपण के समय नाइट्रोजन (N) की आधी खुराक तथा फास्फोरस (P) और पोटाश (K) की पुरी खुराक का इस्तेमाल किया जाए और शेष आधी नाइट्रोजन खुराक का उपयोग उस समय किया जाए जब पौधे की लम्बाई 40–45 सें.मी. तक हो जाए।

कृषि तकनीक

- इस पौधे का संचरण एकत्रित बीजों द्वारा किया जाता है। इसमें पौधों को सूखने दिया जाता है और फलों को कागज़ पर फैलने दिया जाता है।
- बीजों को अच्छी तरह तैयार की गई नर्सरी की क्यारियों में बोया जाता है।
- समानरूपी वितरण के लिए बीजों को सूखी रेत या मृदा में मिश्रित किया जाता है क्योंकि यह बहुत छोटे होते हैं।
- बेहतर अंकुरण तथा हर्ब की अच्छी पैदावार प्राप्त करने के क्रम में बीजों की बुवाई अप्रैल के अंत से मई के अंत तक की जाती है।
- जब तक बीज में अंकुरण आना आरंभ होता है तब तक उचित नमी को कायम रखा जाए।
- 10–15 सें.मी. लम्बी तथा 35–40 दिन पुरानी पौद का प्रतिरोपण 15 × 10 सें.मी. के अंतराल पर किया जाए।
- प्रतिरोपण के तुरंत बाद हल्की सिंचाई से पौध का अच्छी तरह जमना सुनिश्चित हो जाता है।

सिंचाई

- जिन क्षेत्रों में नियमित बारिश होती है वहां बुवाई के दौरान सिंचाई की जरूरत नहीं होती। यद्यपि उत्तरी क्षेत्र के मैदानी हिस्सों में बारिश में उतार–चढ़ाव होता रहता है, अतः यहां पर एक पखवाड़े के अंतराल पर सिंचाई प्रभावशाली होगी।
- चूंकि यह पौध शाकीय है और अपने प्राकृतिक रूप में कोमल है, अतः माह में दो बार नियमित रूप से हाथ से खरपतवार निकालने की सिफारिश की जाती है। शाकनाशी के उपयोग की सलाह नहीं दी जाती क्योंकि इसकी कच्ची दवाइयों को इसके छूटे हुए अपशिष्टों का फसल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

पौध सुरक्षा

प्रमुख कीट : पत्ती खाने वाली इल्ली तथा तने का घुन (वीविल)
प्रमुख रोग : चूर्णी फफूंद

नियंत्रण

1. कीट नाशीजीव का नियंत्रण करने के लिए 0.2% नुवाक्रोन का पौधे पर छिड़काव किया जाए।
2. चूर्णी फफूंद को सल्फर द्वारा प्रभावशाली ढंग से नियंत्रित किया जा सकता है जिसमें फफूंदनाशक जैसे सल्फेक्स 0.25% की दर से शामिल होती है।

कटाई, प्रसंस्करण एवं उपज

- **प्रतिरोपण के 3 माह बाद जब पौधे** हरे और शाकीय हो जाते हैं उस समय फसल **कटाई के लिए** तैयार हो जाती है।
- चूंकि फसल बढ़ती है अतः उसकी लम्बाई बढ़ती है, किंतु पत्तों की संख्या कम होती जाती है, क्योंकि नीचे के पत्ते गिरते रहते हैं। चूंकि मुख्य सक्रिय तत्व पत्तों में होता है, अतः कटाई का मुख्य लक्ष्य उचित समय में अधिकतम पत्ती बायोमास का उत्पादन करना होता है।
- बंगलौर की स्थिति के तहत उच्च औषधि पैदावार के लिए सितम्बर के महीने को कटाई के लिए उचित समय पाया गया है।
- हर्ब को 3–4 दिन छत के नीचे सुखाने के साथ–साथ स्थाई रूप से टैंकों या डंडों पर भी सुखाया जाता है। सूखने के बाद सामग्री को बोरियों में भरकर शीत शुष्क स्थान में भंडारित करके रख दिया जाता है।
- हर्ब की पैदावार अंतराल के अनुसार अलग–अलग होती है। 15 × 10 सें.मी. के अंतराल को अपनाने से **प्रति हैक्टेयर 2000 कि.ग्रा. की शुष्क हर्ब की औसत पैदावार** हासिल की जा सकती है। हर्ब में मौजूद कुल **फाइलेनथिन** तत्व **0.4% से 0.5% के** बीच होता है।

भूमि आँवला के बीज

उत्पाद

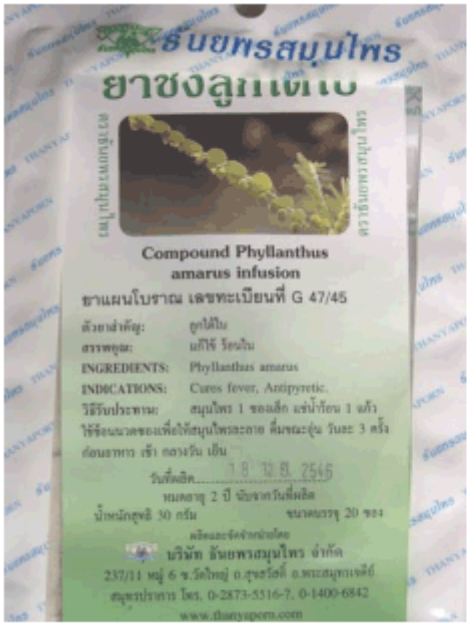

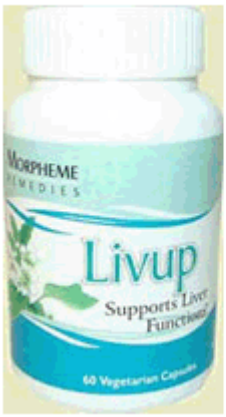

MORPHEME
REMEDIES
Livup
Supports Liver
Function
60 Vegetarian Capsules

ayurved series
PHYLLANTHUS
COMPLEX 500mg
100 VEGE-TABS

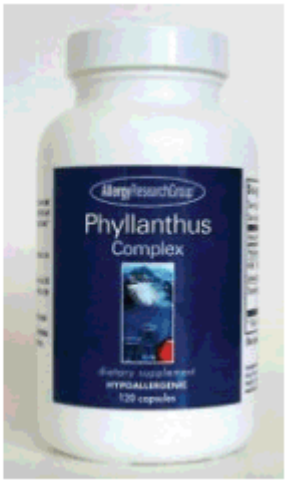

AllergyResearchGroup
Phyllanthus
Complex
dietary supplement
HYPOALLERGENIC
120 capsules